कुछ भी लिखने की आजादी

– मुकेश कुमार चौरसिया

शिक्षण और सीखना दोनों ही एक साथ चलने वाली प्रक्रियाएं हैं। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन से जुड़कर मुझे अपने विद्यालय भ्रमण के दौरान दोनों का अनुभव लेने का मौका मिला। शिक्षण के दौरान मेरा यह अनुभव निकल कर आया कि बच्चे को कोई भी शिक्षण सामग्री या कोई भी तरीका सिखा नहीं सकते जब तक कि बच्चों में उसको सीखने की चाहत न हो। हमारा काम केवल उनकी चाहत को तलाशना होता है। बच्चों की रुचि किसमें है इसके लिए मैंने डायरी लेखन का उपयोग किया। जिसमें प्रत्येक बच्चा अपनी पसंद से कुछ भी लिख सकता था। जैसे कि आज क्या अच्छा लगा, क्या अच्छा नहीं लगा, गालियां, लड़ाई, गाने आदि चीजों के सम्बन्ध में, लिखना नहीं आने पर चित्र बना सकते हैं। गलत–सही जो भी हो। बस अपनी बातों को कैसे भी करके एक जगह संजोकर रखना था। इस डायरी लेखन के दौरान बच्चों को आजादी की अनुभूति हुई। लिखने में किसी को कोई रोका–टोकी न थी और न ही किसी का डर। इसका फायदा यह हुआ कि बच्चों में नियमित लिखने, सोचने और पढ़ने की क्षमता में विकास हुआ।

अक्सर हम बच्चों की जिन बातों को शोर समझ बैठते हैं वह शोर न होकर उनका विशाल ज्ञान भंडार होता हैं। जिसको वह अपने साथियों से बोल–बोल कर साझा करते हैं। मैंने अपने शिक्षण के दौरान इन शोर–शराबों पर ध्यान दिया तो समझ आया कि उनके शोर में आसपास के सांस्कृतिक कार्यक्रम, सही और गलत हर तरीके की बातों का भंडार होता है।

मैंने अपने शिक्षण के दौरान बच्चों को आजादी से लिखने दिया तो बच्चे उम्मीद से ज्यादा तब तक लिखते रहे जब तक खुद उनका मन नहीं भर गया। हां यह अलग बात है कि मैंने उन्हें उनके आसपास की चीजों के बारे में लिखने के लिए प्रेरित किया। कहने का मतलब इतना है कि प्राथमिक स्तर पर हमें बच्चों को लाइनों, शब्द सीमाओं और सही गलत के चक्कर में नहीं लाना चाहिए।

चर्चा कि शुरुआत पिछले वीटीएफ जो कि 'डायरी लेखन से सम्बंधित थी' उसके फीडबैक के साथ शुरू हुयी। मैंने शिक्षकों से इस सम्बन्ध में अपने प्रयास और अनुभव को शेयर करने के लिए कहा जिससे सबसे पहले पाठक मैडम ने बताया कि मैंने क्लास 4 में इसकी शुरुआत की है। लेकिन इसको अभी उतनी निरंतरता के साथ ध्यान नहीं दे पायी हूं। आगे के दिनों में इस पर थोड़ा और ध्यान देंगे। निर्मला और विनीता मैडम ज्यादातर 1 से 3 क्लास लेती हैं तो उन्होंने कहा कि अभी बच्चे लिख नहीं पाते तो मैंने इस पर जोर नहीं दिया। समीर सर ने कहा कि 5 क्लास के बच्चे लिख रहे हैं लेकिन अभी ज्यादातर जो बाते हैं वह अपने सम्बन्ध में ही लिख रहे हैं। सभी शिक्षकों ने डायरी लेखन के बारे में मेरे अनुभव जानने का प्रयास किया। मैंने बच्चों के द्वारा लिखी गयी डायरी सभी शिक्षकों के सामने साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया और कहा कि देखते हैं बच्चों ने क्या–क्या लिखा है और निम्न बातें सामने निकल कर आयीं।

- बच्चों ने स्कूल से सम्बंधित बातें डायरी में लिखी थीं जैसे कि उन्हें आज क्या अच्छा लगा पढ़ने में, किससे लड़ाई हुयी, किसने गालियां दी।
- बच्चों ने अपने परिवार के बारे में लिखा। एक बच्ची ने तो यह भी लिखा कि उसकी मम्मी उसे काम न करने पर गालियां देती है और गाली का नाम भी लिख रखा था।
- बच्चों ने अपने खेल कूद, खाने के सम्बन्ध में, अपने त्यौहारों के बारे में लिखा हैं।
- कुछ बच्चों की डायरी में उनके बड़े भाई–बहनों ने भी टिप्पणी की थी।

इसके बाद इस बात पर सहमति बनी कि ज्यादातर बच्चों ने वही चीजें लिखी हैं जो उनको सामने दिखती हैं। जो उनसे सम्बंधित है। यह नहीं कहा जा सकता कि इन बच्चों के घर पर इन पर कोई ध्यान नहीं देता। क्योंकि इनके डायरी में इनके बड़े भाई–बहनों के कमेंट्स यह दिखाते है कि स्कूल से सम्बंधित कुछ बातें तो घर पर होती हैं। इस पर समीर सर का कहना था कि सर कमेंट्स से क्या होता है? जब हम बुलाते हैं तब तो आते ही नहीं, इनके घर से कोई। रही बात लिखने कि यह अपने बारे में तो लिखते रहेंगे। लेकिन इसके अलावा और कुछ नहीं। इस पर मैंने उन्हें समझाने का प्रयास किया कि अभी यह शुरुआत है और बच्चों में अभी लिखने के प्रति रुचि पैदा करना, जिससे बच्चा सोचना प्रारम्भ करेगा यह है इसके बाद हम इसका उपयोग किसी भी दिशा में कर सकते हैं। शिक्षक साथियों ने इस बारे में कुछ सुझाव दिए जैसे किः–

- एक गतिविधि भाषा के लिए यह हो सकती है कि इनको बोला जाए कि मालूम करके आना कि घर में मौजूद चीजों को स्थानीय भाषा में क्या कहते हैं और हिंदी और इंग्लिश में इसे क्या कहेंगे और इसे अपनी डायरी में लिखने के लिए कहें।
- हम इन्हें जंगल, खेत, जानवरों से सम्बंधित प्रोजेक्ट दे सकते हैं जैसे निजी विद्यालयों में दिए जाते हैं। इस बात में पाठक मैडम ने जोड़ते हुए कहा कि इस गतिविधि से उनके अभिभावकों को स्कूल बुलाये बिना भी शिक्षण में उनकी मदद ली जा सकती हैं। इसके लिए उनके मां–बाप का पढ़ा लिखा होना भी जरुरी नहीं है।
- गणित में भी इनको इनके क्षेत्र से सम्बंधित मुद्दों पर कोई तरीका निकाल कर सवाल दिए जा सकते हैं जो यह बहुत जल्दी समझेंगे।

सहमति बनी कि यह तरीका काम कर सकता है अगर इसको निरंतरता के साथ किया जाए।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, उधमसिंह नगर से जुड़े हैं)

सबसे सुंदर

– नाजिम हिकमत

अभी तक सबसे खूबसूरत समुद्र
किसी ने पार नहीं किया

सबसे खूबसूरत बच्चा
अभी बड़ा नहीं हुआ

सबसे खूबसूरत दिन
अभी हमने देखे नहीं

और...
सबसे खूबसूरत शब्द
जो मुझे कहने थे तुमसे
मैंने अभी तक कहे नहीं...

(अंग्रेजी से अनुवाद: अनिल जनविजय)